पंचम अध्याय -

"विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ"

पंचम अध्याय : ' विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ '

प्रस्तावना -

मनुष्य और समस्या का अटूट और गहरा रिश्ता है। मनुष्य जीवन में यदि समस्या न हो तो उसका जीवन निरर्थक हो जाएगा। समस्याओं ने मनुष्य को अपने चंगुल में फँसा लिया है। उस चंगुल से वह जितना मुक्त होना चाहता है, उतना ही वह उस समस्याओं में उलझ जाता है डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव के मतानुसार - " शरीर और छाया या आत्मा एवं शरीर का जो नित्य एवं शाश्वत संबंध है, वही संबंध 'समस्या' एवं मनुष्य जीवन का है।"[1] समस्या न होती तो मनुष्य सभ्यता का विकास भी संभव न होता। वर्तमान युग में जो समस्याएँ हैं, वही समस्याएँ किसी दूसरे रूप में अति प्राचीन काल में हुई होगी। मनुष्य हमेशा परिवर्तनशील रहा है। वह हमेशा युग के साथ बदलता रहा है।

आज के युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है। विज्ञान ने हमें जीवन की और सूक्ष्म दृष्टिसे देखने की शक्ति प्रदान की है, तथा मानव जीवन में नए-नए अविष्कारों द्वारा प्रगति के द्वार खोल दिए हैं। जैसे-जैसे मानव प्रगति करता रहा वैसे-वैसे वह अनेक समस्याओं से घिरता जा रहा है। मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है की वह हमेशा आशावादी रहा है। पद, प्रतिष्ठा, धनलाभ और भौतिक सुख की प्राप्ति में वह हमेशा प्रयत्नरत रहा है। इसी प्रयत्न में जो बाधाएँ, रूकावटें सामने आती है वे ही 'समस्याएँ' है।

' समस्या ' शब्द पहले साहित्य के क्षेत्र तक सीमित था। आज कल सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप में दिखाई देने लगा है। हम विभिन्न कोशों और विद्वानों द्वारा दी हुई समस्या शब्द की व्युत्पत्ति एवं परिभाषाओं को देखेंगे -

5.1' समस्या ' शब्द की व्युत्पत्ति -

' समस्या ' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'सम' उपसर्ग तथा 'अस' धातु के संयोग से हुई है। 'सम' का अर्थ है ' एकत्र ' तथा ' अस ' का अर्थ 'फेंकना' या रखना अर्थात एकत्र रखना या करना समस्या है।

5.2 समस्या : अर्थ एवं परिभाषा -

हिंदी के विभिन्न कोशकारों ने जिस रूप में 'समस्या'शब्द का अर्थ एवं उसे व्याख्यायित किया है, उसका संक्षिप्त अवलोकन करना समीचीन होगा -

1. 'हिंदी शब्द सागर' के अनुसार -

   "i) संघटन।

   ii) मिलाने की क्रिया।

iii) किसी श्लोक या छंद का वह अंतिम पद या टुकडा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है।

iv) कठिण अवसर या प्रसंग। कठिनाई। जैसे इस समय तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बडी समस्या उपस्थित है।"[2]

2. 'हिंदी विश्वकोश' के अनुसार -

"समसन उक्त स 'क्षेपण' सम् असष्यत्।

i) किसी श्लोक या छंद आंदि का वह अंतिम पद या टुकडा, जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर श्लोक या छंद बनाया जाता हैं।

ii) संघटन।

iii) मिश्रण, मिलाने की क्रिया।

iv) कठिण अवसर या प्रसंग।"[3]

3. 'मानक हिंदी कोश' के अनुसार -

"i) मिलने की क्रिया या भाव। मिलन।

ii) मिश्रण संघटन।

iii) उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निवारण सहज में न हो सकता हो। कठिन या बिकट प्रसंग।

iv) छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए उस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता हे कि, वे आधार पर अथवा उसके अनुरूप छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।"[4]

उपर्युक्त अर्थों से यह ज्ञात हो जाता है कि, समस्या शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है -

1. काव्य या श्लोक का अतिमांश।
2. कठिनाई या उलझनवाली स्थिति।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है। समाज में रहते हुए उसे राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों से उसका अटूट संबंध आता है। अतः प्रस्तुत क्षेत्रों की समस्या संवेदनशील साहित्यकार के साहित्य में नजर आती है। कुसुम कुमार इसके लिए अपवाद नहीं है। कुसुम कुमार के साहित्य में निम्नलिखित क्षेत्र की समस्याएँ नजर आती है।

1. सामाजिक समस्याएँ
2. राजनीतिक समस्याएँ
3. आर्थिक समस्याएँ
4. प्रशासनिक समस्याएँ
5. शैक्षिक समस्याएँ

5.3 सामाजिक समस्याएँ :

प्रस्तावना -

आधुनिक समाज सुधारकों ने समाज में अभिव्याप्त समस्याओं संबंधी विभिन्न प्रकार के आंदोलन चलाये गये। समाज से संबंधित जो समस्याएँ होती है, वे सामाजिक समस्याएँ कहलायी जाती है। सामाजिक समस्याओं के बारे में डॉ. विमला भास्कर का कथन दृष्टव्य है - " वर्तमान युग की समस्याएँ तो कुछ दूसरी रंग में रंगी हुई है। कारण यह है कि आज का व्यक्ति यदि एक ओर पुराने संस्कारों और मान्यताओं से बंधा रहना चाहता है, तो दूसरी ओर उन्हें छोडकर नए संस्कार ग्रहण करने का संघर्ष भी वह निरंतर कर रहा है। इस संघर्ष में वह कहीं - कहीं पथभ्रष्ट हो गया है। वस्तुतः वर्तमान युग, समस्याओं का युग है।"[5]

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में सामाजिक समस्याएँ निम्न प्रकारसे चित्रित है -

5.3.1 विधवा समस्या -

भारतीय समाज में किसी भी काल में विधवा की स्थिति संतोषजनक नहीं रही। भारतीय मानस में यह धारणा घर कर बैठी थी कि स्त्री का विवाह - संस्कार जीवन में एक ही बार होता है। पति की मृत्यु के बाद पत्नी को नरक यातना भोगनी पडती है। उसके साथ समाज अमानवीय व्यवहार करता रहा। विधवाओं की स्थिति काफी निराशाजनक रही। आधुनिक काल में पाश्चात्य शिक्षा, नारी समानता की धारणा, वैज्ञानिक शिक्षा, आदि के कारण नारी जीवन में परिवर्तन आ गया। विधवा नारी स्वतंत्र विचार से विचरण करने लगी। कानून ने विधवा स्त्री को पुर्नविवाह का अधिकार दिया। आज समाज में विधवा की स्थिति मध्ययुगीन विधवा जैसी नहीं है। फिर भी भारतीय विधवा का जीवन उपेक्षित रहा है। इसके संदर्भ में डॉ.रेखा कुलकर्णी का कथन दृष्टव्य है - "जिस तरह भारतीय पतिव्रता स्त्री दुनिया में आदर, गौरव एवं सम्मान की वस्तु है, उसी प्रकार भारतीय विधवा जैसी तुच्छ उपेक्षित, दयनीय दुनिया की अन्य कोई वस्तु नहीं है।"[6] विधवा समस्या को कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम क्रांति क्रांति' नाटक में मेनका की मां जोशी आंटी टीचर है। जोशी आंटी का पति मर चुका है। वह विधवा होने पर हार नहीं मानती; क्योंकि वह स्वयं शिक्षित महिला होने के कारण वह अपने आपको संभाल सकी। इस संदर्भ में मेनका कहती है कि - "जब मेरे पापा चल बसे। मुझे और मेरे भाई को मम्मी ने प्यार की कभी कमी नहीं आने दी। खुद को तो मम्मी ने भुला ही दिया ... कुछ याद रहा उन्हे तो मेरा भाई बादल और मै; उनकी बेटी मेनका।"[7] जोशी आंटी एक टीचर होने के नाते वह स्वयं कमाती थी। इसलिए वह पति की मृत्यु के बाद भी खुद को संभाल लेती है। पुत्र बादल की मृत्यु भी वह भूल जाती है। पुत्री मेनका को किसी भी बात की कमी नहीं आने देती। जोशी आंटी एक आदर्श टीचर के रूप में जानी जाती है। जोशी आंटी का जीवन लेखिका ने भारतीय विधवाओं के लिए आदर्श रूप में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में माधोसिंह की मृत्यु के बाद

कमला विधवा होती है। माधोसिंह की इकलौती बेटी नीति आत्महत्या कर लेती है, बाद में माधोसिंह भी प्राण त्याग देते हैं। बेसहारा बनी विधवा कमला अंदर से टूट जाती है। कमला जिनके आधार पर रहती थी, जिनके लिए वह त्याग की मूर्ति कष्ट उठाती रही, उसे आखिर विधवा बनकर बेसहारा रहना पड़ता है।

कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित विधवा नारी किसी पर आश्रित बनकर नहीं रहना चाहती, वह स्वयंसिद्धा है।

5.3.2 ईमानदार डॉक्टरों के अभाव की समस्या -

आजादी के बाद भारत में वैद्यकीय क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। आज भारत सरकार का स्वास्थ्य तथा आरोग्य विभाग महानगरों से लेकर ग्रामीण भागों तक सरकारी अस्पताल खोल चुका है। लेकिन सरकारी अस्पताल में काम करनेवाले डॉक्टर लोग बेईमानदारी से काम कर रहे हैं। डॉ. माधवी जाधव के मतानुसार - "आज तक डॉक्टर मरीजों के लिए भगवान थे। मानव - सेवा का सदाव्रत उनका धर्म था, परंतु आज इस पेशे में सेवा के बदले व्यापारिकता बढ रही है। डॉक्टरों को मरीज की जान की अपेक्षा 'अर्थ ' प्रिय हो गया है। जिन मरीजों की जेबें गर्म होती है, उन्हें सभी प्रकार की सेवा-सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। अर्थ की गरमाहट पर सेवा की उष्मा निर्भर रहती है।"[8] प्रस्तुत समस्या को कुसुम कुमार नें 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में डॉक्टर लोग माधोसिंह के साथ हृदयहीनता से व्यवहार करते हैं। माधोसिंह का 'पे अॅंड एकाउण्टस आफिस' के रेकॉर्ड में मृत्यु हो चुकी है; ऐसा दर्ज किया गया है। इसी कारण माधोसिंह की पेंशन बंद कर दी गयी है। माधोसिंह को जीवित है, यह सिद्ध करने के लिए मेडिकल सर्टिफिकेट की जरूरत होती है। इसी सिलसिले में वह सरकारी अस्पताल जाता है। वहां के डॉक्टर मनचाहा कारोबार करते हैं। सरकारी अस्पताल की लेडी डॉक्टर बेईमानी से काम करती है। इसी अस्पताल का भ्रष्ट कर्मचारी मरीजों के पर्चे में हेरा - फेरी करके अपने पडोसी मित्र का पर्चा सबसे ऊपर रख देता है। वह तो कतार में सबसे पीछे खडा था, लेकिन भ्रष्ट कर्मचारी के कारण उसे सबसे पहला नंबर दिया जाता है। यह बात लेडी डॉक्टर की समझ में आने पर कर्मचारी कहता है की - "ओ! अपना पडोसी है! इस पर डॉक्टर कहती है कि - "ओ! लेकिन इसे खडा भी तो आगे कर देते!"[9] हेरा - फेरी करके कर्मचारी तथा लेडी डॉक्टर दोनों कतार में अंतिम स्थान पर होनेवाले अपने पडोसी को पहला नंबर देते हैं। फलस्वरूप माधोसिंह को नंबर नही मिलता। उनकी यह बेईमानी माधोसिंह को प्रभावित कर देती है। जिससे पता चलता है कि आज ईमानदार डॉक्टरों का अभाव है।

5.3.3 अस्पताल में भ्रष्टाचार की समस्या -

आज वैद्यकीय सेवा सामान्य लोगों तक पहुँचने के लिए सरकार अपनी ओर अस्पताल खोल रही है। ऐसे अस्पतालों में मरीजों को मुफ्त में औषधियाँ दी जा रही है। सरकार की ओर से हजारों रूपयों का प्रबंध इस पर किया जा रहा है। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर और कर्मचारी

औषधियाँ बीच में ही हडप करते हैं। इसी कारण सामान्य जनता वैद्यकीय सुविधाओं से वंचित रहती है। प्रस्तुत समस्या कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में चित्रित है।

'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में सरकारी अस्पताल में काम करनेवाले डॉक्टर, कर्मचारी, भ्रष्टाचार करते हैं। इस संदर्भ में कतार में खडा एक मरीज कर्मचारी को कहता है कि -"कीमती दवाएँ तो तुम और तुम्हारे डॉक्टर हड़प जाते है।"[10] इससे स्पष्ट होता है कि सरकार द्‌वारा दी गई औषधियाँ सरकारी अस्पताल के नौकर ही हडप करते है। गरीब जनता को सुविधाएँ मिलती ही नहीं। कुसुम कुमार की नजरों में प्रस्तुत समस्या भी नहीं छुटी। सामान्य लोगों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में कुसुम कुमार सचेत एवं सजग है।

5.3.4 आत्महत्या की समस्या -

आत्महत्या के अनेक कारण है, जिनमें आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारण सबसे महत्वपूर्ण है। आज की भीड भरी दुनिया में आदमी एक प्रकार से चूसता जा रहा है। उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बेरोजगारी, दाम्पत्य जीवन में विघटन, प्रेम, शोषण, अन्याय, दहेज, बीमारी, अकेलापन ऐसी बातों से मानव अपने जीवन में संघर्ष करते - करते थक चुका है सहनशीलता की मर्यादाओं को पार कर मनुष्य मृत्यु का सहारा लेता है। परिणाम स्वरूप आत्महत्या जैसी बडी समस्या निर्माण हुई है। इस तरह की समस्या को कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में माधोसिंह की बेटी नीति मनोरूग्न है। नीति अपने मां-बाप की इकलौती बेटी है। नीति की मनोरूग्नता के कारण उसके पति ने उसे त्याग दिया है। इसी कारण नीति अपने मायके में रहा करती है। माधोसिंह नीति को किसी भी बात की कमी नहीं महसूस होने देता। नीति के इलाज पर उन्होंने सारा का सारा पैसा खर्च किया है। माधोसिंह के सेवा-निवृत्त होने के बाद घर में अर्थाभाव की समस्या बढती ही जाती है। 'पे ॲण्ड एकाउण्टस आफिस' के भ्रष्ट अधिकारी माधोसिंह की पेंशन ही बंद कर देते हैं। इसी कारण माधोसिंह के घर में पैसों की तंगी आती है। 'पे ॲड एकाउण्टस आफिस' के भ्रष्ट, हृदयहीन अधिकारी के कारण माधोसिंह को पेंशन मिलना मुश्किल हो जाती है। घर की आर्थिक स्थिती को देखकर नीति चिंतित होकर अपनी उदासीनता प्रकट करते हूए कहती है कि - "पापा.... पापा.... प्लीज पापा, बताइए ना ... मुझे भी पापा, आपने क्या समझ लिया ? वाट हॅव यू अंडरस्टुड पापा? मैं भी नही समझी ... कुछ भी नही जानी पापा - आय हैव नैवर बीन एबल टु अंडरस्टैंड एनीथिंग ! एनीथिंग ऑन दिस अर्थ ! रियलि पापा ! मैं जानती हूं, बस इतना कि मैं आपकी चिन्ता बनी ही हमेशा ! आपकी मुसीबतें बढाती रही ! आपपर बोझ हूं पापा, मैं ...।"[11] अपनी मनोरूग्नता, सरकारी नोकरशाही की हृदयहीनता और आर्थिक विवशता से तंग आकर अंत में नीति आत्महत्या कर लेती है। इस तरह लेखिका ने आत्महत्या की समस्या को चित्रित किया है।

5.3.5 अविवाहित स्त्री - पुरूष की समस्या -

भारतीय संस्कृती में विवाह को एक संस्कार माना है। भारतीय समाज में अविवाहित स्त्री और पुरूष की समस्या अपने आप में एक जटील समस्या है। अविवाहित नारी की समस्या परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से, दहेज देनें में असमर्थता, कुरूपता, विकलांगता आदि कारण हो सकते हैं। मनोविकार, बीमारी, कुंडली, जॉति, गोत्र का मेल न होने से समाज में अविवाहित स्त्री-पुरूष दिखाई देते हैं। उम्र बढ़ जाने से अविवाहित रहनेवालों की संख्या भी बढ़ रही हैं। प्रस्तुत समस्या को कुसुम कुमार नें अपने नाटकों में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम क्रांति क्रांति' नाटक में महिला कालेज की प्राध्यापिका मिस सिंह अविवाहित है। मिसिज दानी मिस सिंह को अविवाहित होने के कारण निकम्मा समझती है। मिस सिंह शिक्षित महिला होने के कारण वह हमेशा अन्याय के विरोध में क्रांती करना चाहती है। अन्याय - अत्याचार के खिलाफ लड़ते समय स्वयं मान-सम्मान का विचार न करते हुए लड़ती है। मिस सिंह के अविवाहित रहने का निश्चित कारण वह एक स्वतंत्र विचार करनेवाली, आत्मनिर्भर, विद्रोही नारी होना है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में पहलवान मगनलाल अविवाहित है। उम्र-चालीस के आस-पास है। वह अच्छे दिल का आदमी है। जब कमला आपका भी जवाब नहीं ऐसे कहने पर मगनलाल कहता है कि - "हमारा जवाब कैसै हो भाभी। हमारा जवाब कोई होता तो हम अब तक यों ही कुंवारे, मलंग, मुस्टंडे दिखाई देते आपको?"[12] पहलवान कहता है कि - "किसी को किसी पे जुलम करते देखा नहीं मैंने कि बस कभी उसका जबडा तोडा, कभी उसकी रीढ़ की हड्डी चकनाचूर। किसी-किसी के तो सिर से बाल उखाडें और चौरास्ते पर उडा दिए।"[13] मगनलाल अपने जीवन में अविवाहित रहता है। इस प्रकार नाटककार ने अपने नाटकों में स्त्री-पुरूषों के अविवाहित समस्या को चित्रित किया है।

5.3.6 बीमारी की समस्या :-

औद्योगिक क्रांति के कारण विशाल नगरों की बढती हुई आबादी, गंदी बस्तियां, गंदा पानी, नव-नवीन उद्योंगों में कारखानों से निकालनेवाला धुऑं और मैल इनके कारण वातावरण प्रदुषित होता है। परिणामस्वरूप अनेक भयंकर रोगों का फैलाव होता है। आज अनेक असाध्य रोगों के कारण अनेक परिवार टूट रहे है। परिवार में कोई सदस्य बीमार हो तो पूरे परिवार को अर्थाभाव के कारण पीड़ित होना पडता है। मध्यमवर्गीय परिवार में बीमारी जैसी समस्या का निराकरण करने के लिए पैसों की जरूरत होती है। घर में अर्थार्जन करनेवाला पुरुष या स्त्री बीमार होने के कारण पूरे परिवार के सदस्यों को अर्थाभाव में जीवन व्यतीत करना पड़ता है। कुसुम कुमार ने प्रस्तुत समस्या को चित्रित करने का प्रयास किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में शेफाली के पिता हमेशा बीमार रहते है। उनके परिवार में पांच सदस्य है। इनमें से सिर्फ शेफाली की मां अकेली अर्थार्जन करती है। पति की बीमारी के कारण परिवार चलाने की पूरी जिम्मेदारी शेफाली की मां पर है। शेफाली की मां हमेशा चिंतित रहती है। वह शेफाली के प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि - "नहीं, अभी नहीं ... कुछ देर बैठूंगी ... तू जा ... बाबा को दवा देनी होगी ... अम्मा दुःखी है ... बाबा के दुःख से ... मेरे दुःख से ...।"[14] शेफाली की मां को शेफाली के विवाह की चिंता है। अपने तीन बेटियों के विवाह का दायित्व उसकी मां पर है। अर्थाभाव के कारण शेफाली की मां शेफाली का विवाह लफंगे समाजसेवक के बेटे बकुल के साथ करने के लिए राजी है। मां को अपने बेटियों के विवाह करके अपनी जिम्मेदारी को निभानी है। शेफाली स्वाभिमानी प्रवृत्ति के कारण बकुल के साथ विवाह करने के लिए राजी नहीं होती। आखिर शेफाली की मां को परिस्थितिवश किरन का विवाह बकुल से करना पड़ता है। पति की बीमारी के कारण मां को अपनी जिम्मेदारी निभानी पडती है। इसलिए वह अपनी बेटी किरन का विवाह लफंगे समाजसेवक के पुत्र बकुल से करा देती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में माधोसिंह की बेटी नीति मनोरूग्न है। नीति माधोसिंह की इकलौती बेटी है। मानसिक बीमारी के कारण नीति को उसके पति ने त्याग दिया है। अतः नीति अपने पिता के घर में ही रहती है। माधोसिंह ने अपनी नौकरी में जितने भी पैसे जमा किये है, वह नीति के इलाज पर खर्च किये हैं। प्रस्तुत संदर्भ में कमला कहती है कि - "कुछ नहीं है उसे फिर भी उसके इलाज पर घर का सामान छोड सारा रूपया - पैसा खर्च हो गया।"[15] नीति की मानसिक बीमारी पर इलाज करने के लिए माधोसिंह के परिवार को कंगाल होना पडता है।

कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटकों में बीमारी की समस्या को उठाकर मध्यमवर्गीय परिवार की प्रमुख समस्या पर गंभीरता से चिंता जतायी है।

5.3.7 मकान के अभाव की समस्या :-

रोटी, कपडा और मकान ये तीन मनुष्य की प्राथमिक और महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ हैं। इन तीन आवश्यकताओं के इर्द-गिर्द मनुष्य का जीवन घूमता नजर आता है। सामान्य आदमी के लिए प्रस्तुत तीन आवश्यकताओं की पूर्ति में पूरा जीवन व्यतीत करना पडता है। कुछ लोग फूटपाथ को ही अपना मकान बनाते हैं। सामान्य लोगों के लिए मकान काफी दूर की बात होती है। प्रस्तुत समस्या को कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में चित्रित करने का प्रयास किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में मनन ज्योतिषी को मकान न होने के कारण उसे यमुना के घाट पर जीवन व्यतीत करना पडता है। मनन अपनी व्यथा को व्यक्त करते हुए कहता है कि - "क्या किया जाए भाईजान, घर न हो तो घाट पर बैठना पडता है।"[16] मनन

ज्योतिषी का मकान न होने के कारण उसे घाट का सहारा लेना पडता है। मनन ज्योतिषी जैसे कई लोग है, जिन्हे रहने के लिए मकान नही है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक में चित्रित माधोसिंह को स्वयं का मकान नही है। नौकरी के दिनों में वह दिल्ली में रहा करता था। वहाँ भी उनका मकान नहीं है। सेवा-निवृत्ती के बाद माधोसिंह अर्थाभाव के कारण दिल्ली जैसे महानगर को छोडकर अपने पैतृक गॉव अलीगढ़ में रहने के लिए जाता है। वहाँ भी उनका स्वयं का मकान नहीं है। वह अपने मित्र मगनलाल के मकान में किराये पर रहता है। माधोसिंह का स्वयं का मकान न होने के कारण उसे अपने मकान की समस्या हमेशा सताती है। दिल्ली जैसे महानगर में मकान का किराया देना माधोसिंह के लिए मुश्किल है। इसलिए वह कहता है कि - "खाना - पीना और पचास रूपये मकान का किराया ... फिर भी यहां तो सब चल ही जाएगा ... शहर में इतने पैसों से घर चलाना मुश्किल था ... यहां देहात है, यहां क्या है? ... मैं तो खुश हूं मगना .... मैने रिटायर होने से पहले सोच लिया था ... रिटायर होकर यही आकर रहूंगा ... यहां खुली हवा है मेरे सांस लेने को ... टहलने को ... दिल्ली में मेरे लिए क्या रखा था ... मुझ जैसे मामूली बाबूगीरी करनेवाले के लिए वहा की रौनक किस काम की थी ?"[17] माधोसिंह को दिल्ली जैसे महानगर में किराये पर मकान लेकर रहना मुश्किल है। इसीलिए वह देहात में रहने के लिए जाता है।

कुसुम कुमार यह सूचित करना चाहती है कि मकान की समस्या नगरों में अधिक बढ रही है। इसका सही निराकरण देहात में रहने से हीं हो सकता है।

5.3.8 परित्यक्ता की समस्या :-

किसी-न-किसी कारणवश विवाह के बाद पति जब पत्नी को त्याग देता है तब ऐसी स्त्री को 'परित्यक्ता' कहा जाता है। डॉ. भारती शेळके के मतानुसार - "भारतीय समाज व्यवस्था ने पत्नी के होते हुए पुरूष अन्य कितनी भी स्त्रियों से विवाह कर सकता है। पत्नी के जीवित होते हुए उसकी उपेक्षा करके वह अन्य स्त्री से विवाह करता है परंतु विडंबना यह है कि परित्यक्ता से विवाह करने की मान्यता समाज नहीं देता। सामाजिक मानसिकता यही है कि स्त्री चरित्रहीन या अन्य किसी गलती के कारण ही पति ने उसका त्याग किया है। स्त्री हीं लांच्छित ठहरायी जाती है। जिस घर में उसकी डोली गयी है, उसी घर से उसकी अर्थी उठेगी यही धारणा माता-पिता के साथ समाज की होती है।"[18] प्रस्तुत समस्या का चित्रण कुसुम कुमार ने अपने नाटक साहित्य में किया है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में नीति परित्यक्ता नारी के रूप में चित्रित है। नीति मनोरूग्न होने के कारण उसके पति ने उसे त्याग दिया है। नीति माधोसिंह की इकलौती बेटी है। वह परित्यक्ता होने के कारण अपने मायके रहा करती है। दामाद के बारे में मगनलाल द्वारा पूछे गए प्रश्न पर माधोसिंह कहता है कि - " बडे ओहदे पर हीं है, पर हमसे कोई सरोकार नहीं। नीति हमारे पास ही रहती है।"[19] नीति अपनी व्यथा को व्यक्त करती हुई कहती है - " रियली पापा मैं

जानती हूं, बस इतना कि मैं आपकी चिन्ता बनी रही हमेशा। आपकी मुसीबतें बढाती रही। आपपर बोझ हूं पापा, मै ...।"[20] नीति को परित्यक्ता जीवन असहाय होने पर अंत में वह आत्महत्या कर लेती है। नीति के माध्यम से लेखिका ने परित्यक्ताओं के जीवन की समस्या को चित्रित किया है।

5.3.9 अधिकारियों द्वारा स्त्रियों के लैंगिक शोषण की समस्या -

नारी शिक्षा के कारण विभिन्न कार्यालयों में नारी की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। ऐसे कार्यालयों में उनके वरिष्ठ अधिकारी पुरूष है। जो नारी को अपनी भोगवस्तु मानते है, कार्यालयों में वे अधीनस्थ स्त्रियों का लैंगिक शोषण करते हैं। ऐसी नौकरी पेशा नारियों के लिए लैंगिक शोषण की समस्या का सामना करना पडता है। जिसका जिक्र कुसुम कुमार के नाटकों में देखने मिलता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में 'पे ॲण्ड एकाउण्टस ऑफिस' में नौकरी करनेवाली अलका को प्रस्तुत समस्या का सामना करना पडता है। इसी ऑफिस के अधिकारी मिस्टर ए.अलका को घिनौनी दृष्टि से देखता है। मिस्टर ए.अलका की प्रशंसा करते हुए कहता है- "कलवाली पिक्चर में आपकी बडी याद आई अलकाजी। ... पिक्चर की हिरोइन की शक्ल आपसे इतनी मिलती थी, इतनी - लगता था, जैसे आप दोनों जुडवाँ बहने हों।"[21] मिस्टर ए. अलका का कंधा जोर से दबाता है। अलका मिस्टर ए. के लैंगिक शोषण से त्रस्त होकर नौकरी छोडकर जाना चाहती है। अलका कहती है कि - " बहुत जल्दी इस दफ्तर की नौकरी छोडकर जानेवाली हूं।"[22] अधिकारियों की घिनौनी नजर, उनकी मादकभरी बातों पर तंग आकर अलका नौकरी छोडने पर मजबूर होती है। वरिष्ठ अधिकारी द्वारा अधीनस्थ स्त्रियों के लैंगिक शोषण की समस्या का निराकरण करने के लिए सरकारने कानून बनाया है, फिर भी प्रस्तुत समस्या आज भी कायम है।

5.4राजनीतिक समस्याएँ :-

प्रस्तावना -

राजनीतिक नेता 'जनसेवा' और 'देशसेवा' के नाम पर स्वार्थ हेतू सत्ता प्राप्त करने के लिए साम, दाम, दंड, भाव और भेद इन सभी का उपयोग कर सत्ता प्राप्त कर लेते हैं। राजनीति को अपनी पैतृक संपत्ति मानते हैं। अपना मनचाहा कारोबार करते, स्वार्थी हेतू सामने रखकर राजनीति के साथ खिलवाड करते हैं। इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक समस्याएँ निर्माण होती है। कुसुम कुमारने अपने नाटकों में जिन राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है, वे निम्न प्रकार से हैं -

5.4.1 सुविधाभोगी राजनेताओं की समस्या : -

भारत में राजनेता लोग सुविधा भोगी बनें हैं। प्रधानमंत्री से लेकर सभी मंत्री महोदय सैर करने के लिए विदेश जाते हैं। इनकी विदेश यात्राओं पर लाखों रूपए खर्च करते हैं। हर एक मंत्री किसी-न-किसी कारणवश विदेश दौरे पर जाते हैं। सुविधा भोगी राजनेता अपने मन बहलाने के लिए अनेक साधन सुविधाएँ जुटा रहे हैं। समाजसेवा, देशसेवा सिर्फ कहने भर के लिए होती है। उनके हर एक कार्य में स्वार्थ निहित होता है। ऐसी स्वार्थप्रेरित राजनीति की वजह से आज राजनीति जैसा क्षेत्र गंभीर समस्या का क्षेत्र बना है। प्रस्तुत समस्या को कुसुम कुमार ने अपने नाटकों मे चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँ चा सुनती है' नाटक के प्रारंभ में मगनलाल अखबार पढ़ता है। अखबार पढ़ते-पढ़ते अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है - " विदेशमंत्री पेरिस गए। चलो अच्छा है। सैर का मौका भी तो अभी है। प्रधानमंत्री बदरीनाथ की यात्रा पर। ... भगवान तुम्हारा भला करे। मन की बाकी मुरादें भी पूरें करे ! अस्सी साल की उमर में प्रधानमंत्री बने हो, यह भी उतनाहीं मुश्किल था जितनी बदरीनाथ की यात्रा।"[23] मगनलाल राजनीतिक सुविधाभोगी नेतालोगों की सुविधा भोगी प्रवृत्ति पर प्रतिक्रिया देते हुए राजनेताओं की समस्या को स्पष्ट करता है। मगनलाल और माधोसिंह पेंशन के मामले मंत्री कुलजीवन लाल के पास जाते हैं। उस समय मंत्री कुलजीवन लाल माधोसिंह के साथ चालबाज राजनीति का व्यवहार करता है। यह निम्न वार्तालाप से स्पष्ट होता है -

" मंत्री - कोशिश करते रहिए - कोशिश करते रहना बस आदमी के अपने अख्तियार में है ... वह गांधीजी ने कहा है ना, हम खुद अपने पर अन्याय करते है, कोई दूसरा हमपर अन्याय नहीं करता ... (प्लेट में रखे अंगूर तोडकर खाता है।)

कर्मचारी - आपके जूस का टाइम हो गया सर।

मंत्री - रख दो। हाँ देखो, मिस रूहानी से पूछो, क्रिकेट का स्कोर क्या है ?"[24] मंत्री कुलजीवन लाल को माधोसिंह की बिनती का कोई महत्व नहीं है। उसे खाना-पिना, क्रिकेट का स्कोर देखना अच्छा लगता है। मंत्री कुलजीवन लाल के व्यवहार से उनकी सुविधा भोगी प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। जनता से उनका कोई सरोकार नहीं है। ऐसे स्वार्थी, सुविधा भोगी नेताओं की भरमार राजनीति में दिखायी देती है।

अतः हम यह कह सकते हैं कि नेताओं की सुविधा भोगी प्रवृत्ति के कारण सामान्य जनता की ओर उनका ध्यान नहीं जा रहा है।

5.4.2 चुनावी दाँव - पेंच की समस्या :-

राजनीतिक नेता सत्ता प्राप्ति की होड में चुनाव जीतने के लिए अलग-अलग दाँव - पेंच अपनाते हैं। वोट प्राप्त करने के लिए धर्मनिरपेक्षता के नाम पर ढिंढोरा पीटकर अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं। दलितों, अल्पसंख्याकों के प्रति सहानुभूती दिखाकर उनसे वोट प्राप्त करना चाहते हैं। चुनाव जीतने के लिए घिनौनी राजनीति का सहारा लेते हैं। प्रस्तुत समस्या का जिक्र कुसुम कुमार के नाटकों में दिखाई देता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में राजनेता चुनावी दाँव - पेंच में प्रेम भावना का प्रयोग कैसे करते हैं, इसका विस्तृत चित्रण मिलता है। प्रस्तुत नाटक में समाजसेवक सत्यमेव दीक्षित का बेटा बकुल हरिजन युवती शेफाली को प्यार के मोहजाल में फंसाकर उसके साथ विवाह करना चाहता है। एक हरिजन युवती से विवाह किया, ऐसा विज्ञापन देकर हरिजनों के प्रति सहानुभूती दिखाकर जनता से वोट प्राप्त करना चाहता है। बकुल प्रेमभावना का प्रयोग कर जनता को फंसाना चाहता है। शेफाली बकुल की कुटील चाल को जान लेने पर कहती है कि - " तकलीफ तब और भी ज्यादा होती है जब पता चले कि यह हकीकत मेरे प्रेमी के वेश में कोई फैशनेबल - मतलबी लोकसेवक है, जो घात लगाकर मुझे कहां से कहां ले आया।"[25] सत्यमेव दीक्षित को अपने बेटे बकुल का विवाह शेफाली से कराकर चुनाव जीतना है। सत्यमेव दीक्षित कहता है की - " हम तो जो कहते है, वहीं करते है ... अब आप ही देखिए - अपने इकलौते बेटे की शादी एक हरिजन लडकी से करना कोई मामूली समझौता तो नहीं ? इसके जवाब में मनन कहता है कि - यह झूठ है। ... सरासर झूठ है, महाशय। ... यह फैसला आपने इसलिए किया है ताकि लोग आपकी गगनचुंबी समाजसेवा पर फूल बरसा सकें - मैंने मिसाल कायम की है ... मुझे उठाओ ... मंच पर लाओ ... नायक बनाओं मुझे ... देखो लोगे, मुझे देखो।"[26] इससे यह स्पष्ट होता है कि समाजसेवक सत्यमेव दीक्षित और उनका बेटा बकुल वोट प्राप्त करने के लिए चुनावी हथकंडे अपनाते हैं। प्रेमभावना का प्रयोग करनेवाले राजनीतिक नेता पर लेखिका कुसुम कुमार व्यंग्य कसते हुए लिखा है - " छोडिए, सत्यमेवजी। समाजसेवा नहीं, यह समाजयोग है। यही समाजयोग आपको उस राजयोग तक पहुंचाएगा। समाजसेवा के भुनाऊ रास्ते से चलकर राजनीति के मंच पर चढना चाहते है तो चढिए - एतराज किसे है? ... ताकद की शराब पीना चाहतें हैं तो पीजिए ... लेकिन अपने ही खरे-खोटे सिक्कों को भुनाइए। लोकसेवा - समाजसेवा के नाम पर किसी और की भावनाओं को अपना दाना-पानी मत बनाइए।"[27] चुनावी दाँव - पेंच में प्रेमभावना का प्रयोग करके दिखावटी राजनीति का प्रदर्शन करके अपना स्वार्थ साधना चाहते है, प्रस्तुत समस्या पर लेखिका ने प्रकाश डाला है।

5.5 आर्थिक समस्याएँ :-

प्रस्तावना -

अर्थ मानव जीवन का महत्वपूर्ण घटक है। अर्थ के अभाव में मानव जीवन निरर्थक है। अर्थ प्राप्ति के लिए मानव हमेशा विविध मार्गो से प्रयासशील रहता है और अपना जीवन सुखी एवं संपन्न बनाना चाहता है। लेकिन अर्थप्राप्ति की तृष्णा मृगजल के समान है। वह उसके पीछे लगता है, उसकी अर्थप्राप्ति की प्यास कभी बूझती नहीं। मानव अर्थाभाव के कारण जीवन में कंगाल बनता है। प्रस्तुत समस्या का जिक्र कुसुम कुमार के नाटकों में दिखाई देता है।

5.5.1 अर्थाभाव की समस्या -

अर्थाभाव की स्थिति दरिद्रता की समस्या को जन्म देती है। अर्थाभाव की समस्या बढती महंगाई, परिवार में अर्थार्जन करनेवाले व्यक्ति की मृत्यु या बीमारी, कुंठाजन्य विवशता, पारिवारिक संबंधों में मनमुटाव आदि अनेक कारणों से निर्माण होती है। परिवार का सुख, चैन, 'अर्थ ' पर निर्भर है। इस तरह की समस्या को कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में अभिव्यक्त किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली ' नाटक में शेफाली के पिता बीमार होने के कारण घर की सारी जिम्मेदारियाँ शेफाली की माँ पर है। शेफाली की माँ अकेली कमाती है। वह मिस साहब के यहाँ नौकरी करके अपने पूरे परिवार को चलाती है। शेफाली की माँ को अपनी तीन बेटियों की पढ़ाई का बोझ उठाना मुश्किल हुआ है। अर्थाभाव के कारण शेफाली की माँ शेफाली को ग्यारहवीं तक शिक्षा देना चाहती है। शेफाली की माँ कहती है कि - " लडकियॉ .. .. इन्हें खाना, पहनना, पढ़ाई सब चाहिए, लेकिन मेरे सिर पर ! जरा- सा यह कहतें हुए इनकी जबान कटती है .. .. भले लोगों .. .. हम हरिजन है.. .. देखरी शेफाली .. .. तू तो अच्छी तरह सुन ले .. .. यह दसवीं क्लास पास कर ले और चल हाथ बंटा मेरा .. .. अब आगे तुझे और पढ़ाना मेरे बस का नहीं ! "[28] अर्थाभाव के कारण शेफाली के परिवार की ट्रेजेडी हो जाती है। वह अपनी बेटियों की शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाती और अपनी जाति में अपनी बेटियों के विवाह नहीं कर पाती । प्रस्तुत समस्या का मूल कारण अर्थाभाव ही है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक का नायक माधोसिंह ने दिल्ली महानगर में छत्तीस साल तक क्लर्क की नौकरी की है। सेवा - निवृत्त होने के बाद वह अपने पेन्शन के पैसों पर अपने परिवार को नहीं चला सकता । इसलिए वह दिल्ली छोडकर अपने पैतृक गाँव अलीगढ़ में रहने के लिए जाता है। अर्थाभाव के कारण माधोसिंह को महानगर छोडकर गाँव जाना पडता है। इस संदर्भ में माधोसिंह कहता है कि - " शहर छोडने की बडी हूक है ना तुम्हारे मन में .. ? पर जब शहर में थे, तब भी तो तुम खुश नहीं थी ? चौबीसों घंटे पैसे की तंगी .. . आठों पहर सिक्के की कमी । शहर में और क्या क्या ? "[29] ' पे अॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' के भ्रष्ट अधिकारी माधोसिंह की पेंशन ही बंद कर देते हैं। पेंशन मिलना बंद होने से माधोसिंह के

परिवार की आर्थिक स्थिति और बिगड जाती है। माधोसिंह के घर में चूल्हा भी नहीं जलता। माधोसिंह अर्थाभाव से तंग आकर अपनी मन की व्यथा को अभिव्यक्त करते हुए कहता है की - " और मुझे ? मुझे घर में बुझा हुआ चूल्हा क्या अच्छा लगता है ? जो पैसा कर सकता है, आदमी नहीं कर सकता कमला ! आज सुबह से घर में चूल्हा नहीं जला ..।"[30] माधोसिंह अर्थाभाव के कारण अंदर से अंदर टूटता है। मकान मालिक मगनलाल उनकी आर्थिक स्थिति देखकर चाय बनाने की सामग्री और पचास रुपए देता है। यह स्वीकार करने में माधोसिंह की पत्नी कमला संकोच व्यक्त करती है। इस पर माधेसिंह अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहता है कि - " रख लो कमला ... खुद को और मत उघाडो .. रख लो .... अपने हालात की सच्चाई कब तक ऐसे ना - ना करके झुठलाओगी .. . मगना सारी बाजियाँ हार के लिए क्यों लगाता है .. . समझ जाओ कि वह नहीं चाहता, हमारे चेहरे की लाली उसका हर उपकार हजम करके भी किसी तरह कम न हो ... वह जो भी दे ... जिस रूप में भी दे ... लेती जाओ कमला ! चुपचाप लेती जाओ।"[31] कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में अर्थाभाव की समस्या को प्रमुखता से उजागर किया है।

आर्थिक समस्याओं के अंतर्गत कुसुम कुमार ने साधन - सुविधाओं का अभाव, गरीबी, बेकारी आदि समस्याओं का जिक्र अपने नाटकों में किया है।

5.6 प्रशासनिक समस्याएँ -

प्रस्तावना -

भारत सरकार का प्रशासकीय कार्य मंत्रालयों एवं संबंधित विभागों में विभक्त है। मंत्रालयों में कई विभाग होते हैं। मंत्रालय तथा विभाग अपने कार्यक्षेत्र के भीतर उचित प्रशासकीय व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते हैं। ये अपने विभाग के लिए नीति निर्धारित करते हैं तथा उसे कार्यान्वित करते हैं। जिससे प्रशासन तथा जनता का परस्पर सहयोग निर्माण हो सके। जिससे सरकार की ओर से जो योजनाएँ कार्यान्वित की जाती है, वह सामान्य लोगों तक पहुंच सके। लेकिन भारत की प्रशासकीय व्यवस्था में अव्यवस्था ही अधिक पाई जा रही है। जनता के प्रति उनका कोई सरोकार नहीं है। अधिकारी मनचाहा कारो बार कर रहे हैं। ईमानदारी, सौहार्दपूर्ण व्यवहार भूल गये हैं। मंत्रालय, अधीनस्थ विभागीय कार्यालयों में काम करनेवाले अधिकरी हृदयहीनता से व्यवहार करते हैं। हर जगह रिश्वतखोरी, भाई - भतीजावाद दिन-ब-दिन बढता ही जा रहा है। कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में प्रशासन संबंधी जिन समस्याओं को चित्रित किया है, वे इस प्रकार से हैं -

5.6.1 सरकारी कार्यालयों में लालफीताशाही की समस्या -

सरकारी कार्यालयों में लालफीताशाही की समस्या सबसे बडी प्रशासकीय समस्या बन गयी है। सामान्य व्यक्ति अपना कोई भी काम लेकर सरकारी कार्यालय में चला जाता है, तब भ्रष्ट, रिश्वतखोर सरकारी कार्यालय के कर्मचारी उस व्यक्ति के काम को लालफीताशाही के कूचक्र में फंसा देते हैं। जिससे सामान्य व्यक्ति लालफीताशाही की चक्की में पिसा जाता है। इसके

परिणामस्वरूप लालफीताशाही की समस्या निर्माण होती है। प्रस्तुत समस्या कुसुम कुमार की पैनी दृष्टि से नहीं छुटी।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में चित्रित नायक माधोसिंह को पेंशन प्राप्त करने के लिए भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के विभागीय कार्यालय ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' में जाना पडता है। वहाँ कार्यालय में काम करनेवाले अधिकारी कामचोर, भ्रष्ट, ह्दयहीन हैं। माधोसिंह का 'पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' की रेकॉर्ड में मृत्यु हो चुकी है। इसलिए माधोसिंह की पेंशन ही बंद कर दी गयी है। माधोसिंह को जीवित है, यह प्रमाणित करने के लिए मेडिकल सर्टिफिकेट की जरुरत है। पेंशन के संदर्भ में जो कुछ भी कागजातों की जरुरत है, यह सब सबूत के साथ आवेदन लिखकर माधोसिंह घर लौटता है। दूसरे दिन माधोसिंह बडी उम्मीद से ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' जाता है। वहाँ माधोसिंह को कार्यालय की कार्य पध्दति से तंग होना पडता है। यह निम्न कथन से स्पष्ट होता है -

" कोई - इटज एस्ट्रेज केस !

अन्य - फॉर फरदर इन्स्ट्रक्शनस मिस्टर आर. !

अगला - फॉर एबल गायडैन्स मिस्टर क्यू. !

मिस्टर क्यू - फॉर फायनल डिसीजन मिस्टर पी. !

मिस्टर पी. - नो कोर्स ऑफ एक्शन कैन बी टेकन इन द सरकमस्टान्सेस।"[32] यह सब देखकर माधोसिंह अपना धैर्य खो बैठता हे। फिर भी उसे लगता हे कि पेंशन मिलेगी। माधोसिंह डायरेक्टर जनरल मिस्टर पी. को कहता है कि - " मैं अर्ज कर रहा था साहेब कि मुझे इस बात का एकदम अंदाजा नहीं या - यहाँ आपके दफ्तर में भी मेरे पैसे किसी कारण से रुक सकते हैं। इसके जबाब में मिस्टर पी. कहता हैं कि - वाह ! यही पर तो हमें आदमी की असली एनक्यायरी करनी पडती है। जैन्टलमैन ! .. . पैसों का मामला है ! ... ऊपर से नीचे तक सब तरह की क्लियरैन्स यहीं तो जरुरी है ? दिस इज पे ॲण्ड एकाऊण्ट्स आफिस ! यह कोई किसी के घर की टकसाल तो नहीं कि जो आए, अपना हक बताए, पैसा ले और चलता बने !- समझे न आप ?"[33] माधोसिंह को अंत में अफसरों के सामने 'जी - जी ' कहकर खाली हाथ घर वापस लौटना पडता है। माधोसिंह को पेंशन की रैजिस्ट्री उनकी मृत्यु के बाद ही मिलती है। माधोसिंह को मरते दम तक पेंशन न मिलना इसका सही कारण भारतीय प्रशासन व्यवस्था में आयी हुई अव्यवस्था, अधिकारियों की टालमटौल प्रवृत्ति, उनके भ्रष्ट आचरण का ही द्योतक है। नाटककार ने कार्यालयीन कामकाज में लालफीताशाही की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है।

5.6.2 भ्रष्ट, ह्दयहीन नौकरशाही की समस्या :-

भ्रष्ट अधिकारी निजी स्वार्थ की सिद्धि के लिए समाज हित की उपेक्षा करता हुआ दिखायी देता है। समाज के प्रति उनके मन में थोडा भी प्रेम नहीं है। अगर किसी व्यक्ति से रिश्वत मिलने की संभावना नहीं होती तो ये अधिकारी लोग उस व्यक्ति के साथ ह्दयहीनता से व्यवहार करते हैं।

सरकारी कार्यालय में काम करनेवाले अधिकारी भ्रष्ट आचरण कर रहे हैं। भ्रष्टाचार ही उनका शिष्टाचार बना हुआ है। भ्रष्ट नौकर रिश्वत के आदि बनें है।

सरकारी कार्यालय में भ्रष्टाचार दिन-ब-दिन बढता जा रहा है। भ्रष्टाचार के संबंध में पवन चौधरी का निम्न कथन दृष्टव्य है - " भ्रष्टाचार हिमालय से भी ऊँची और हवा से भी हलकी एक भारी भरकम हकीकत है।"[34] शासन तंत्र में जब तक रिश्वतखोर रहेंगे, तब तक भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति को और भी बढावा मिलता रहेगा। जिससे प्रस्तुत समस्या अपना विकराल रुप धारण करके सामान्य लोगों को त्रस्त करती रहेगी ।

सरकारी कार्यालय में काम करनेवाला सामान्य लिपिक अपने वरिष्ठ अधिकारी की मेहरबानी से अपना प्रमोशन किस तरह से भ्रष्ट मार्ग का प्रयोग करता है, इस बात का सही चित्रण कुसुम कुमार ने ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में किया है। प्रस्तुत नाटक में चित्रित चपरासी दयाराम कहता है कि - " लेकिन साहब, आप तो पहले छोटे क्लर्क लगे, फिर बडे क्लर्क बन गए, फिर बडे साहब की मेहरबानी से एसिस्टेंट हो गए ... हम तो चपरासी लगे थे, चपरासी ही लगे रहेंगे .. .. हम पर किसकी मेहरबानी होगी ? और वैसे आप से कुल दो ही दर्जा तो कम पढ़े हुए है।"[35] प्रस्तुत प्रसंग के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि भ्रष्ट नौकर अपनी योग्यता न होते हुए भी वरिष्ठ अधिकारियों की कृपादृष्टी से प्रमोशन करवा लेते हैं।

' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स अफिस ' का असिस्टेंट अधिकारी मिस्टर ए. रिश्वत का लालची है। मिस्टर ए.कहता है कि - " यहां साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना ! ... रिश्वत मिलेगी और यहां ? हुंह ! भूखे - नंगों का दफ्तर है यह ... सब कानी कौडी के मोहताज साले ... खुद पेंशन पर गुजर करनेवाले ! उनसे रिश्वत मिलेगी ? भूल जा, डी.आर. भूल जा।"[36] मिस्टर ए. को माधोसिंह से कुछ रिश्वत नहीं मिलनेवाली है, इसलिए वह माधोसिंह के साथ हृदयहीनता से व्यवहार करता है। इस संदर्भ में निम्न कथन दृष्टव्य है -

" मिस्टर ए. - कहिए, क्या काम है ?
माधोसिंह - आप ही रेकार्ड असिस्टेंट है यहां ?
मिस्टर ए. - जी !
माधोसिंह - आप से कुछ काम है।
मिस्टर ए. - काम अभी शुरू नहीं हुआ।"
माधोसिंह - कब तक शुरू होगा ?
मिस्टर ए. - ... ।"[37]

मिस्टर ए.माधोसिंह द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर बहुत ही सकुडकर देता है। मिस्टर ए.का सहकर्मी अधिकारी सोनी भी माधोसिंह की पेंशन के बारे में उपेक्षा भाव रखकर कहता है कि - " इसमें नई बात क्या है यार, चाय पिलाओ, चाय। पेंशन के मामले तो यहां सुबह से रात तक चलते हैं।"[38] मिस्टर सोनी भी माधोसिंह के साथ हृदयहीनता से व्यवहार करता है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी कार्यालय में काम करनेवाले अधिकारी हृदयहीन हैं। सामान्य जनता को भ्रष्ट,

हृदयहीन अधिकारियों से किस प्रकार सामना करना पड़ता है, प्रस्तुत पक्ष को लेखिका ने चित्रित किया है।

अतः हम कह सकते है कि सरकारी कार्यालयों में काम करनेवाले अधिकारियों में रिश्वतखोरी बढ़ रही है, जो सामाजिक स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी चिंता जनक है।

5.7 शैक्षिक समस्याएँ : -

प्रस्तावना : -

सामाजिक जीवन का उचित दिशा निर्देशन करने का साधन है, शिक्षा। शिक्षा व्यक्ति पर संस्कार करते हुए उसे समाज के साथ जोड़ने का कार्य करती है। अतः व्यक्ति का हित ही समाज हित है। आज भारत देश में शिक्षा के विभिन्न स्तर निर्माण किए हैं। जिसमें प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा ऐसे तीन भागों में विभाजित है।

आज प्रायः सभी स्तरों पर शिक्षा का विस्तार हो चुका है। प्रारंभिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, स्कूल और कालेज भी गावों में या उनके आस - पास उपलब्ध हैं। शिक्षा के उदारीकरण, सार्वत्रिकरण के कारण भारत में, गाँवो, नगरों में सभी स्तर पर शिक्षा का प्रचार- प्रसार हुआ है। शिक्षा के उदारीकरण के साथ - साथ आज शिक्षा - व्यवस्था में भी अनेक समस्याएँ निर्माण हुई है। जैसे अध्यापकों के सामाजिक, नैतिक और राष्ट्रीय दायित्व होते हैं। लेकिन वर्तमान युग में इन दायित्वों के प्रति अध्यापक सज़ग नहीं है। यहां तक की अध्यापक विद्यार्थियों को संपूर्ण पाठ्यक्रम भी नहीं पढ़ाते हैं। अध्यापकों में दायित्वहीनता दिन - ब- दिन बढ़ती जा रही है। महाविद्यालयों का विद्यार्थी वर्ग अधिकाधिक अनुशासनहीन होता जा रहा है। इसका सही कारण यह है कि, आज का विद्यार्थी दूसरों की अच्छी बातों का अनुकरण वह तुरंत कर लेता है यथार्थ में दोष उनका भी नहीं, दोष है व्यवस्था, परिवार और समाज का। कुसुम कुमार विवेच्या नाटकों में शैक्षिक समस्याएँ निम्न प्रकार से चित्रित हैं -

5.7.1 शिक्षा क्षेत्र में आयी अव्यवस्था की समस्या : -

शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में अव्यवस्था दिन - ब - दिन बढ़ती जा रही है। स्कूल से लेकर कालेज तक सभी जगह अध्यापक और विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता बढ़ रही है। अध्यापक अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और राष्ट्रीय दायित्व को भूलकर मनचाहा कारोबार कर रहे हैं। अध्यापक कक्षा में जाकर छात्रों की उपस्थिति लेकर छात्रों के सामने अध्यापन का तोता रटंत बातें रटकर चले जाते हैं। लेकिन विद्यार्थियों को कुछ समझ में आया या नहीं इसकी उन्हें चिंता ही नहीं है। कालेज के प्रिंसिपल भी अध्याप्कों का पक्ष लेकर चलते हैं। इसी कारण शिक्षा व्यवस्था में अराजकता बढ़ रही है। कुसुम कुमार ने प्रस्तुत समस्या को अपने नाटक ' ओम् क्रांति क्रांति ' में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में चित्रित मिसिज दानी अनुशासनहीन भ्रष्ट प्राध्यापिका है। मिसिज दानी ने पूरे महिला कालेज में अराजकता फैला दी है।

मिसिज दानी कक्षा में जाते समय देरी सी जाती है। कक्षा में इधर - उधर की बातें करके सिर्फ टाईम - पास करती है। मिसिज दानी के बारे में थैलमा कहती है कि - " आएंगी तो वह हमेशा की तरह अपनी चाल से ही ... आधा पीरियड सरकने को होगा तब आएंगी श्रीमती दानी ... महाज्ञानी ... अजब परानी।"[39] मिसिज दानी कक्षा में पढ़ाते वक्त कुछ गलतियाँ भी करती है। विद्यार्थियों द्वारा गलतियों की याद दिलाने पर उल्टे विद्यार्थियों डांटती है। मिसिज दानी कहती है कि - " पुस्तक में जो लिखा है उसे लिखा रहने दो, तुम, जैसे मैं बोलती हूं, उसे नोट करो। जहां 'सक्कर' लिखा है वहां 'शक्कर' कर लो ।"[40] आजकल प्राध्यापक लोग कोर्स पूरा भी नहीं करते। टालमटोल करके समय काटते है, प्रस्तुत पक्ष का चित्रण कुसुम द्वारा लिखित नाटक ' ओम् क्रांति क्रांति ' में हुआ है। मिसिज दानी कक्षा मे जाते समय देरी से जाती है। इसलिए कोर्स पूरा होना असंभव है। इस संदर्भ में निम्न कथन दृष्टव्य है -

" मेनका - ठीक है, मैम, लेकिन इस तरह कोर्स कैसे पूरा होगा ?

मिसिज दानी - कोर्स की चिंता मुझे तुझसे ज्यादा है।

मेनका - हो सकती है ... पर अभी तक तो कुछ भी पूरा नहीं हुआ।"[41]

मिसिज दानी को कोर्स पूरा करने की चिंता नहीं है। मिसिज दानी कोर्स पूरा किया कहकर छुट्टी पर जाने की इच्छा व्यक्त करती हुई कहती है कि - " हां, जा तो रही हूं। अपना कोर्स करीब - करीब पूरा करवा दिया था, इसलिए सोचा, छुट्टि लेकर कुछ इधर - उधर के काम भी पूरे कर डालूं? इसके जवाब में मिस सिंह कहती है कि - अच्छी बात है ! आपने कोर्स तो पूरा करवा दिया ! यहां तो न कोर्स पूरा हुआ और न दूर - दूर तक पूरा होनें की कोई उम्मीद ही है।"[42] इससे यह स्पष्ट होता है कि मिसिज दानी ने कोर्स भी पूरा नहीं किया है। जो अपने दायित्व से दूर भागती है।

महिला कालेज में अराजकता फैलाने में अकेली मिसिज दानी ही नहीं है, दानी जैसी भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज बुखारी भी है। वह कक्षा में हमेशा देरी से जाती है। इस संदर्भ में अनू कहती है कि - " नहीं, नहीं ! वाह ! मिसिज बुखारी भी तो क्लास में बीस मिनट लेट आती है।"[43] मिसिज दानी और मिसिज बुखारी दोनों सहयोगी प्राध्यापिकाएँ हैं। दोनों लेक्चरर ने महिला कालेज की व्यवस्था में अराजकता फैला दी है।

महिला कालेज की प्रिंसिपल भी पक्षपाती भ्रष्ट महिला है। मिसिज दानी और मिसिज बुखारी के विरोध में छात्रा क्रांति का नारा लगा देती है। प्रिंसिपल मेनका जोशी पर आरोप लगाती हुई कहती है कि - " वो ये कि जब वे पढ़ाती हैं, तुम कुछ - न - कुछ ऊट पटांग पूछकर क्लास में बाधा डालती हो।"[44] प्रिंसिपल पक्षपाती का निर्णय लेकर अंत में मेनका और थैलमा को कालेज से रस्टीकेट कर देती है। शिक्षा - व्यवस्था में आयी हुई अव्यवस्था को समूल उखाड़ फेंकने के लिए क्रांति की जरूरत है। ऐसा संदेश प्रस्तुत नाटक के माध्यम से लेखिका ने दिया है। जो प्रस्तुत समस्या का निराकरण है।

शैक्षिक समस्याओं के अंतर्गत लेखिका ने शिक्षकों के अध्यापन से विरत होने की समस्या से दर्शकों, पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है।

निष्कर्ष : -

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं को देखने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि कुसुम कुमार ने समाज में जिन समस्याओ को करीब से देखा है, उन समस्याओं को अपने नाटकों में सहजता के साथ चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में जोशी आंटी का जीवन विधवा समस्या से संबंधित है। लेखिका प्रस्तुत पात्र के माध्यम से यह सूचित करना चाहती है कि भारतीय विधवा नारी को जोशी आंटी बनना चाहिए। जिसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है। जोशी आंटी पात्र के माध्यम से लेखिका ने अपना साफ तथा उदात्त दृष्टिकोण दर्शकों तथा पाठकों के सामने रखा है।

भारत के सरकारी अस्पतालों में ईमानदार डॉक्टरों का अभाव है। प्रस्तुत समस्या को लेखिका ने ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' इस नाटक में चित्रित किया है। सरकारी अस्पतालों के डॉक्टर रोगियों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। रोगियों को मुफ्त में मिलनेवाली दवाइयाँ वे बाहर बेच देते हैं। इसमें पैसा कमाकर भ्रष्टाचार करते हैं। प्रस्तुत समस्याओं के प्रति लेखिका ने गंभीर चिंता प्रकट की है।

आत्महत्या की समस्या को लेखिका ने अपने नाटक ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' में चित्रित किया है। अर्थाभाव और मनोरुग्नता से पीड़ित लोग आत्महत्या करते हैं। प्रस्तुत नाटक की नीति इस समस्या का अच्छा उदाहरण है।

अविवाहित स्त्री - पुरूषों की समस्या को लेखिका ने अपने नाटक ' ओम् क्रांति क्रांति ' और ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' में चित्रित किया है। आज स्वच्छंदी जीवन - यापन करने के लिए स्त्री - पुरूष अविवाहित रहना ही पसंद करते हैं। इसके साथ - साथ स्वच्छंदी जीवन - यापन करनेवाले स्त्री - पुरूषों को किसी के अधिपत्य में रहना अच्छा नहीं लगता। फलस्वरूप प्रस्तुत समस्या पनप रही है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में चित्रित मिस सिंह इस समस्या का प्रतिनिधिक पात्र है।

मकान अभाव की समस्या को लेखिका ने ' सुनो शेफाली ' और ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटकों में चित्रित किया है। लेखिका ने प्रस्तुत समस्या का समाधान करते हुए ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में माधोसिंह को नगरों में मकान का अभाव होने के कारण अपने पैतृक गाँव में रहने के लिए जाते हुए दिखाया है। प्रस्तुत समस्या का निराकरण करने के लिए लेखिका ने गाँव जाने की ओर प्रेरित किया है। नगरों की तुलना में ग्रामों में मकान सहजता से उपलब्ध होते हैं।

परित्यक्ता की समस्या को लेखिका ने ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में नीति के रूप में चित्रित किया है। नीति को मां - बाप पर आश्रित रहना पड़ता है। नीति जैसी परित्यक्ताओं का जीवन अंधकारमय हैं। जिन्हें आत्महत्या ही करनी पड़ती है। यही परित्यक्ताओं के जीवन की शोकांतिका है।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में अधिकारियों द्वारा स्त्रियों के लैंगिक शोषण की समस्या दिखाई देती है। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उनके अधीनस्थ काम करनेवाले स्त्रियों के लैंगिक शोषण करने पर उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है।

संवेदनशील भावुक कुसुम कुमार की नजरों से राजनीतिक क्षेत्र की कुछ समस्या नहीं छुट पायी हैं। सुविधाभोगी राजनेताओं की समस्या की ओर लेखिका का ध्यान गया है। उन्होंने प्रस्तुत समस्या को अपने द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में चित्रित किया है। प्रस्तुत समस्या के माध्यम से लेखिका ने राजनेता, राजनीति को अपनी बपौती समझकर जनता के पैसों पर ' ऐशोआराम ' का जीवन जीते हैं, जिसकी लेखिकाने पोल खोल दी है। लोकतंत्र में चुनाव एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती है, लेकिन चुनाव में राजनेता लोग कैसे काले कारनामें करते हैं, इसका चित्रण कुसुम कुमार ने ' सुनो शेफाली ' नाटक में किया है।

मानव जीवन में ' अर्थ ' महत्त्वपूर्ण है, जिसके अभाव में मनुष्य जीवन निरर्थक है। प्रस्तुत कथन से प्रेरित होकर लेखिका ने अपने नाटकों में अर्थाभाव की समस्या को काफी गंभीरता के साथ चित्रित किया है। अर्थाभाव के कारण विजातीय विवाह करना पडता है (किरन बकुल का विवाह - ' सुनो शेफाली ' नाटक) साधन सुविधाओं का अभाव, गरीबी, बेकारी आदि समस्याओं से जूझना पड़ता है!

प्रशासनिक समस्या की ओर भी लेखिका का ध्यान गया है। सरकार जनता के लिए ही होती है, लेकिन सरकारी कार्यालयों में अभिव्याप्त लालफीताशाही की समस्या को लेखिका ने सरकार एवं जनता के बीच की आज की गंभीर समस्या के रूप में चित्रित किया है। सेवा - निवृत्त माधोसिंह को अपने अधिकार का निवृत्ति- वेतन पाने के लिए दर - दर की ठोकरे खानी पड़ती है। जिसमें वह इहलोक की यात्रा समाप्त करता है। यही प्रस्तुत समस्या की गंभीरता है।

शिक्षा जैसा पावन क्षेत्र भी आज नयी - नयी समस्याओं से घिरता जा रहा है। जैसे कुसुम कुमार के नज़रों से अध्यापकों की उत्तरदायित्वहीनता, छात्रों में बढ़ती हुई अनुशास्नहीनता आदि समस्याएँ नहीं छुट पायी। प्रस्तुत समस्या का चित्रण ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में हुआ है।

संदर्भ सूची

अं.क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रं.
1.	डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव	' यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन'	24
2.	डॉ.श्याम सुंदरदास	' हिंदी शब्दसागर ' भाग - 10	41, 67
3.	सं.नगेंद्रनाथ वसु	' हिंदी विश्वकोश' भाग - 23	503
4.	सं.रामचंद्र वर्मा	' मानक हिंदी कोश ' भाग - 5	283
5.	डॉ.विमला भास्कर	' हिंदी में समस्या साहित्य '	35
6.	डॉ.रेखा कुलकर्णी	' हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी '	253
7.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	26
8.	डॉ.माधवी जाधव	' मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित विविध समस्याओं का मूल्यांकन '	370
9.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	64
10.	वही	वही	67
11.	वही	वही	69
12.	वही	वही	26
13.	वही	वही	86
14.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	62,63
15.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	30
16.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	23,24
17.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	22
18.	डॉ.भारती शेळके	' साठोत्तरी प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों में चित्रित परिवार '	622
19.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	21
20.	वही	वही	68
21.	वही	वही	42
22.	वही	वही	वही
23.	वही	वही	15
24.	वही	वही	93
25.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	60
26.	वही	वही	54
27.	वही	वही	52
28.	वही	वही	32

29.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	18
30.	वही	वही	59
31.	वही	वही	60
32.	वही	वही	82
33.	वही	वही	84
34.	पवन चौधरी	' मनमौजी उवाच '	106
35.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	34
36.	वही	वही	वही
37.	वही	वही	35
38.	वही	वही	40
39.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	21, 22
40.	वही	वही	35
41.	वही	वही	24
42.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	57
43.	वही	वही	15
44.	वही	वही	77